

DPN 6160

Title : जलहोम विधि JALAHOMA VIDHI

Run. No. 6851

Cat. No. 90

Micro. No.

Subject Ritual

Religion : Hindu / Bauddha

Language : Skt. / New. / Nep. / Skt. / New. / Maith. / New. / New. / Nep. /

Size in cms. 19.5 X 8.5

Folios 29

Lines (in a page) 6

Compl. / Incompl.

Chapt. / act /

Author / translator

Scribe / donor

फणीन्द्ररत्न वज्राचार्य

Date: NS / SS / VS / KS 898

Ruler / place Phanindra Ratna

Script : New. / Dev. / Bhuj. / Ran. /

Illus. : Yantra Bajracharya

Material : palmleaf / paper / thiyasaphu /

Condition : fine / damaged by worms, rats, water /

Beginning, colophon, post-colophon :

* नमो रत्नत्रयाय ॥ ध्वति धापना याय ॥ ॥ धन रोचय ॥ गुरु मेदल पञ्चगव्य ॥ सिद्ध तय ॥ गुरु
मण्डल विसर्जन ॥ समाधि. केसा (कलशा) धिवासन. निरांजन. पुष्पन्यास ॥ धनंरी वरुन कोड
प्रभुरन ॥ नव नागवस स्वान छफाल तम । P.T.O.

□ संवत् ८५८ आषाढ कृष्ण १२ स महाराजा रत्नवाहोर (रत्नवाहापुर) सप्तेवनः
वा मगानाओ सेगुस सान्ति याना. चतुराकार जज्ञ. खासिबरी ॥ नाग साधन
पूजा याडाओ पूर्ण धुनकाओ: विसर्जन यानाओ नागज वरुणा क्रुड: खास २
तयकर छोया ॥ पूजाया कर्माचार्यन: नन्दपती, उपाध्याय मन्वारवाहारया
ध्वजेन मद्र ॥



उः शाय हास

उरुः पूरुमकि

लकककटक नः लिलः ॐ य वर्षावः धूपः कमु आरुगिस्वां	रपरिमन कक मानिकेः कंस धूपनकिः ॐ क विनेस्वाः आउव उरुः साखन	खायुः कृत्रिक माशनः नः शाय हा नः धूपकसहा कनस्वान वर्षककम	शखधु धुग नकि मिहा कप वान	कसी धन निवा साखन वाक कक
उरुगिवा एदकिनः पद्यः पुष्यरागः सिकुन मासः धूपपनकिम	एमधः वनः रुन पाधः धूपशाखध पनस्वानः विहीन	उरुनः वाशुकिः मनः शहाः पूरुम धूपः वानः कयी माकिस्वाः नः ॐ म	नूपकम कमुनी पनकग व धनी	शायका पूरुमकि पूरुम
वरुमभास्वानः व गारा	ॐ उरुः कलि	उरु वाक		
रुनः सखपात्रः क कटकः हासः अन धूपनूपकसः किधि खानवर्ष आउ	पूर्वः ननकः नीन लः धूपमिहाय शायकास्वां खानवाः वरुहाक उरु धन	ॐ साः महापद्य मनिः कंसः का नन धूपः धुगः उरुस्वां वरुकास	धन कलि साखन शाहमल मात्रीकी गदननया	

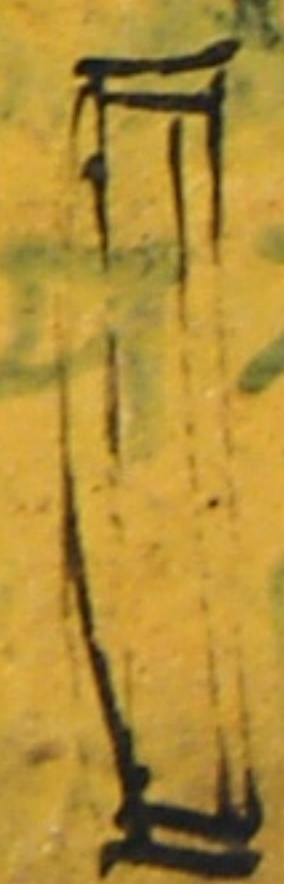
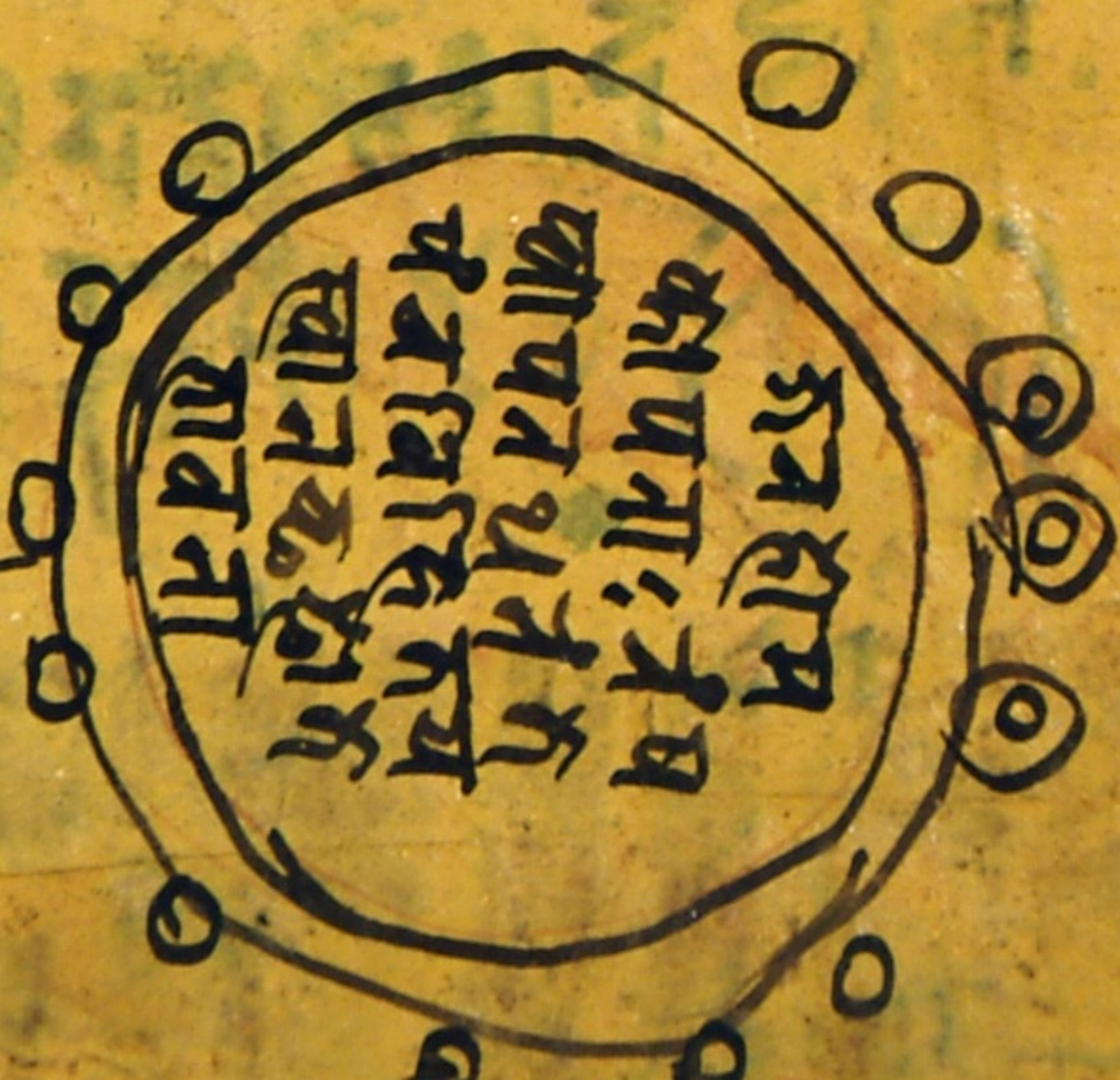
रुनककम

उरुपंयंगु

नागपत्राय नमः ॥

ॐ शाहनृक हं न हं नागानवर्षाय २ हं नागिनिकात्र संवतं रुद्र स्वाहा ॥ नाग
पूजामस्तु ॥ ॐ उवउं उं उं मित्रि स्वाहा ॥ नागपत्राय नमः ॥ ॥ ॐ नमः नृकयाय
ॐ नमः नृकवर्षाय नयः माहाकुरुषेतापनय वं ध २ सूत्रपकात्र नृपिनि स्वाहा ॥ ना
दनयाय येन सकसागरा धिच्छियमस्तु ॥ ॥ ॐ वननागनाकायः ॐ हं हं
मृदियवषापत्रयः वषाप्यवषाप्य हं हं रुद्र स्वाहा ॥ नाकवर्षाय नमः ॥

ॐ शाहनृक हं न हं नागानवर्षाय २ हं नागिनिकात्र संवतं रुद्र स्वाहा ॥ नाग



८५२० नं थ वि सि ॥

दिपड (धामयामि ॥ वाः द्वाः मरुताः पूजामि संपंवा मरुतय ॥ ॥
धनं लिखलक्ष्म मया य ॥ कापवासः वंशव्यापनयना ॥ धिसस्वा
नकृत्वा लक्ष्म ॥ दिगविदिगसु उर्ध्वं नय ॥ रावनाः रुद्रग्री २ पत्रव
॥ धूपनिवाङ्मनः नात्र वा मरुतं ॥ पूजा मर्का मर्धं पूजा स ॥ धलक
स्त्रिवाकू ॥ अरुतवा ॥ ॥ आवाहानय ॥ मरुत अरुतहा ले
धनवी अर्घया य ॥ दिगविदिग उर्ध्वं ॥ पूजा मरुतः पृष्ठाया सः वरी

15
पूजाः कक्षाल-वनीस-यः धनः कस्तुरिः सारवतः दाः पंचामृतः
पंचगन्धः ॥ धनं कुलहामस ॥ पञ्चविहि-रु को गकः भवनाममा
ल ॥ कुलहामकापनाम अर्घयाय ॥ इवोक्थु अरुणः नायधनिन
याडाः अर्घयाय ॥ हिनिलसांस्वानचुलनयः संकपयनिष्ठा
रावनाधपः निवांजनः राहागिलका ॥ रावना ॥ स्नानयायः प
ञ्चमृतः पंचगंधः वनसिंधुः दिप्तिनकनक ॥ हस्तपूजाः मर्जीक

भं ॥ ध्वनीः पुनिष्ठा रावना ॥ पञ्चसूक्तानहिनिसुवीनाडाः वड
वाहालस्वानमाजाजाडा ॥ रुपमनुयाय १०८ मनुध ॥ उं डूं डूं
वडि एवरुद नि सु रूं रूं स्वाहा ॥ र्यधर्माः पुनिष्ठाः वडुः नायनय
स्वानमाजा नय ॥ ध्वनीक मियानः हा नपूजाः धिहायः धननाडा
॥ सगाकुल ॥ धनमाहावनिविय ॥ मधुलधिलः स्वानकनः गुनूय
जाः ओसिर्वीद ॥ विसर्जन ॥ पूयीहायः वननकाडनयके ॥ वनी

२ नाग साधन ॥ योऽय ॥

न सत्त्वज्ज्यादिदान पूत्रसंलं विहाय ॥ धूप श्रीखटु कस्तुरि ॥ जू
र्घयाय ॥ पूषां न्यास ॥ पंचापहात्रपूजा जूषना स्था घंथवादन
पूषादिपूजा ॥ उ वज्रसमयसत्त्वकूं माहास्त्रं पूषास्थितिषिंथ ४
उंजा ४ वज्रवलनायकूं स्वाहा ॥ पूजामस्तु ॥ उ वज्रवज्रननागाधि
पतय ॥ उं वद्विपवर्षापय २ इं नं कूं स्वाहा ॥ पक्षपहात्रपू
जा पंलां घंठुनि ॥ मध्या ॥ ॥ पूर्वजनननागकनकवर्गक

मलाकं मूढानि निर्नां जनपहं सफरुना च क मखं द्विहूं कूं
गांजलिं नाहन ध हूं गम काल उपलिमन मूर्ति समय
सत्त्व तत्समं हान सत्त्वं जूधादिदा संगा घंठुनि वलिनें चिं
यना ॥ धूपसिद्धय धल ॥ पूषादिपूजा ॥ उंजा ४ जननायकूं स्वा
हा ॥ पूजामस्तु ॥ उं जनन माहाना गाधिपतय ॥ उं मंजं वद्विपव
कलनी जनपूत्र २ वर्षापय २ इं नं कूं स्वाहा ॥ पंलां घंठु ॥ पूषा ॥

॥ ॥ दक्षिणपद्मनावालादि कमयं चीवस्तलाऊनं जीयः
सफरुना कुचंदमनात्र संहिने दिहूऊ कमयं कतां जलिनं
नारुनद रुऊं गा कालं उपलिमनूयं समयसत्वं तत्समयहा
नं अर्घादि ककुत्वा नरे वत्रिन विरुयन् ॥ धूप पत्रक सत्रनि
ॐ ॥ पूषादि पूजा ॥ ॐ पद्माय कूं स्वाहा ॥ पूजा मनु ॥ ॐ आ ॥ ४ पद्मना
गाधिप नय ॥ हं कूपजल पूजय २ ॥ वद्विप वर्षीपय २ ॥ नं

कूं स्वाहा ॥ पंलांयं रुना ॥ दक्षिण ॥ ॥ पश्चिम ॥ न रुकं नाम्नः
मयः न वावर्हि रुकं गिनां ॥ सफरु मां कूं कमन कं दिहूऊं ॥ उकम
खं कतां जलीनः नारुनध ४ सूर्या कात्रं उपरी मनूखा नूपं ॥ समयस
त्वं विहावा ॥ तत्समं शनसत्वं ॥ अर्घादि कंकुत्वा ॥ नरे वत्री नं विरु
य ॥ धूप ॥ नकि ॥ साखलः पूषादि पूजा ॥ ॐ आ न रुकाय कूं स्वाहा ॥
पूजा मनु ॥ ॐ न के के महाना गा यै धिप नय ॥ हं कूपजल पूजय २

ऊम्बदिपर्वषापय २ हूं न हूं स्वाहा ॥ पं नां घं मु नि ॥ ॥ ॥

उरुववासूकि सफरु नाव ऊमयः जीमलवाचि न सित्रं हविना
हं द्विह ऊक मूरवे कगां ऊनीनः नाह वधः सप्य कात्रं उपविमन
घंः समयसत्वं नत्संज्ञान सत्वं अर्घादिकं पून सत्रं कत्वा नत्वे वनी
नवीरुयत ॥ ॥ धूपवात्रवाक ॥ पूषादिपूजा ॥ उं वासूकि मे हूं ॥ ॥
स्वाहा ॥ पूजा मनु ॥ उं आ वासूकि महाना राधिप नय ॐ हूं कूपक

लः पूनय २ ऊम्बदिपर्वषापय २ हूं न हूं स्वाहा ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
संखपाल गिसक मयं स्वस्ति कार्कशीर्षः सफरु नाविनः द्विउ
ऊक मूरवंः कगां ऊलि नः नाह वधः पन्न रा कात्रं उपनत्र नूपं
समयसत्वं नत्समयः स्नान सत्वं अर्घादि पून सत्रं कत्वा नत्वे वनि
विनयत ॥ धूपनूपकं सत्रः रुलकं क स ॥ पूषादिपूजा ॥ उं आः

संखपात्राय हूं स्वाहा ॥ पूजा मन्त्र ॥ ॐ आ संखपात्रायः महानाग
धिपे नमः ॥ हं ऊं मूदिपः कूपजलपत्रय वर्षापय २ हूं नं हूं स्वाः
हा ॥ पं रां घं मुनि ॥ ॥ नै मयं ॥ कं कं टकः कां स मयं सफर
ना ॥ नु नी गार ॥ ग्व न म म्वा निगया कं गी नः द्वि तु ऊं क मखं क
गाजलीः ना हं नदः रु ऊं ग कलंः उप नि म नू षं स मय सत्वं न
स मय स न सत्वंः अद्यादि कत्वा न न व नी कं न य नू ॥ धूय क मु ॥

हाय हा म ॥ पूषादि पूजा ॥ ॐ आः कं कं न काय हूं ॥ पूजा मन्त्र ॥
ॐ आ कं कं ट काय हूं स्वाहा ॥ ॐ आः कं कं ट काय महानाग धिप
नयः पना नी ऊं न मा वा हय २ ॥ हं ऊं मूदिपः कूपजलवर्षापय
२ हूं नं हूं स्वाहा ॥ पं रां घं मुनि ॥ ॥ वायू वा ॥ कृत्रिक नी ह मयं
ः सफर नापि नय क नः वा उ व र्णं ॥ नू क नाली चि न कं हंः
द्वि तु ऊं क मखं क नां ज नी ना हं न धपः न ग ॥ उप नी म नू षं स म

यस्यः नमः समंस्तनसत्वंः अर्थादिककृत्वाः नमेव विविचय
न॥ धूपः सहा॥ पूजा कि॥ पूषादिपूजा॥ उं आ क्री का य स्वा
हा॥ पूजा मन्त्र॥ उं आः क्री क ना श धि प न यः ॐ हं कृ प ऊ न प
त्रय ऊ म्बु दि प वार्षा प य २ हं नं हं स्वाहा॥ ॥ ॐ सा न महा प
मः नृ पा म यः नी ना त्य न कि द सि त्रः स फ रू नां क रू क व रू दि
उ ऊ च क मू खं क नां ज त्रिं ना ह न धः रु ऊ रां उ प नी म नृ ष्यं स म य

सत्वं नमः समंस्तनसत्वं अर्थादिककृत्वाः नमेव विविचय न॥ धूप
युगु॥ प्रयं यु॥ पूषादिपूजा॥ उं आः महा पद्मा य हं स्वाहा॥ पूजा
मन्त्र॥ उं आः महा पद्म मा य महा गै नो धि प न य ॐ हं कृ प ऊ न प
त्रय॥ ऊ म्बु दि प वार्षा प य २ हं नं हं स्वाहा॥ पं नां यं मु नि॥ ॥
नमा व नि दा प यः वा म क रं रु ना का र्थे नः द क्रि न व व द हि न य म
सा र्थ्य॥ ध न सं ख न इ इ आ कृ न ना यः द्वा रू त्र स्वा न न स्यं हा य र्कः॥

२ अर्धमकुनाराया ॥

वरी मन्त्रश्च॥ ॥ उं नमः वायुकिः नरकः कर्कटकः पद्मम
हापद्मः संखपालः क्रीकः वनपालः दवनि महादवनि शामसि
रिवदधुन महादधुन अपमानः दूतः नन्दी पनन्त साशत्रु माहा
साशल अनपगफः महागफः शीकानि माहाकानिः सूनप माहा
सूनप रुडाहिक जूमक स्यकूप पादस्य पनिमित्तार्थं आराग्य महा
दवः सिद्धिः माहासिद्धिः आराग्य राग्य महानाश धिपगया उरुन

दानपत्रं अमुकस्यः कृपः पादस्य पत्रं निमित्तार्थः आयुः आशाः शयः
 ऊर्ध्वः वर्षाः पत्रिपत्रयः शीवः शयः आशयः यः नरः नरः
 अर्थः पत्रं स्वाहा ॥ ॥ सनातन ॥ कमिहान पञ्चा ॥ वाः अरुणा
 नडाज्ञाय ॥ नडाका आदनकः सिद्धयलमहाचकनयक नडाका
 थाः अरुनका पूयकः च वा कदनकः पूषादिपञ्चा ॥ पंरां घं मुनि
 ॥ मंथुल थिलकः स्वाननक ॥ सनातन ॥ रुमापन ॥ दक्षिणा पञ्चा

वासुकिः गरुडः कक्षः कक्षः पनः

वन्नपात्रद्विः महाद्विः सामसिखः

महाहृदधनः अपवायः हृन्नुन्नन्दापनन्दः सागवः मह

वरुपकशीकानिः महाकानिः सूत्रप महासूत्रप

महाद्विसित्री महासित्रीः ह महाविपकयः पनात्रीः कृपः आगन्तया

नार्थस्वस्तिस्वाहा ॥ नमो आपध्वान ॥ ॥ नमो आपमंदनमध्वानं

कायन पद्ममात्रं नरूपवियं कायविजं वन्ननयं नकमूरवद्विः

जं शुक्रवर्नसफरुना नकन वा मनागपागधना पूर्वद्वे ॥ अनन

नागवाजा निववना छिरुना ॥ दक्षिन्नद्वे ॥ महापद्मनागवाः शुक्र

वर्धपंवरुना ॥ पश्चिमद्वे ॥ गरुडकनागवाजा नकवर्धः नवरु

ना ॥ उरुवद्वे ॥ वा शुक्रिनागवाजा शमवर्धः सफरुना ॥ वृत्त

द्वे ॥ संखपात्रनागवाजाः नकवर्धसफरु ॥ भेमरुप ॥ कक्षः कक्षः

15
नागनाडाधवनवर्हः सफरुता ॥ वायुव्य ॥ कूनीकनागनाडाक
कूमवर्हः सफरुता ॥ गूमानक ॥ महापद्मनागनाडापिनवर्ह
सफरुता ॥ स्वस्वमडाविगाव्य ॥ स्वारुमुसमापनासमर्नकयः संप
सुनजहहिगागावनादवः अष्टकं महाधिपनय ॥ हं ऊम्वदिप
पनात्रिः नायआगव ॥ २२ ॥ वस्व ॥ पंवांघं मुनि ॥ निवांउत्त ॥ ॥
नकिनाऊहं ॥ ३० ॥ किनाऊमूडा ॥ उंवनायस्वाहा ॥ उंअनायस्वाहा ॥
चं हं

उंवाशुकि हं व हं ॥ उंनक काय हं न हं ॥ उंपद्यय हं न हं ॥ उंमहापद्म
य हं न हं ॥ उंसंखपात्राय हं न हं ॥ उंककाटकाय हं न हं ॥ उंकनी
काय हं न हं ॥ पंवांघं मुनि ॥ वनादयानागनाऊनः स्वस्वदवव्यव
स्तिगः सस्वास्वपयसदानिर्यं वनानामा मु ॥ सर्वगथागनकाय ॥
विश्वधनस्वाहा ॥ संखवंखनसस्तान ॥ उंवऊदप्यन हं ॥ कूसकन
कन ॥ इदमाधन ॥ उंखल्लावाहं ॥ नगाऊलसिमाविय ॥ उंवना

15
य सर्वविद्याह्वयः ॥ ज व सि मा वा हि सा ध न ॥ ॐ स्वं श वा रु ह्ने स्वा
ह गा व न न शु क ने ह्ने का व न न च व रु य मा नं शु क व ऊं वि हा वा
मि त्र दू या ॥ ॐ व ऊ व न ना य स्वा हा ॥ व न सि ॥ ॐ वा धि व
न सि ॥ ॐ व ऊ य स्र य स्वा हा ॥ इ व न सि ॥ ॐ व ऊ व
इ व ऊ कू व ना य स्वा हा ॥ व इ सि ॥ ॐ व ऊ
प नि ह ना य स्वा हा ॥ कू म ॥ व ऊ

सर्वपापदहनव जाय सर्वपापद ह स्वा हा ॥
हा ॥ अ रु न ॥ व ऊ व न स य स्वा स्वा हा ॥ न व ॥ ॐ व ऊ व
स्वा ॐ मा ॥ सर्वार्थ सि धि य स्वा हा ॥ यी का ॥ ॐ व ऊ इ से न ना य स्वा हा
का व सि ॥ ॐ व ऊ वा श्र य स्वा हा ॥ ना य ॥ ॐ न्ना ह्ने स्वा हा मि ॥ मू न मं
उ जी स फ वा ॥ वी ही दू य ॥ ऊ वा ह्ने निया य ॥ ध न स्र ना इ ॥ ध
न का डाः म रु न्या स ॥ जा य ॥ ॐ व ऊ व न ना य ॥ ॐ ह्ने

गिरा

सरसवन २५५. सत्र...

१५ का नक्षत्र

५०: सत्वपूजा के जल होम निधि

जल होम

फरशीन्दुस्त वज्राचार्य

५५

दशम उपासना

॥

नमः क

५०: सत्वपूजा के जल होम निधि

जल होम

फरशी दुरत वज्रोच्चर्य

मि ४ ४/५

५०: ५०

॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ धनं

मलकाधूनकाडा ॥ पंजांघं कु

वदवस्तिनः सत्वाथयसदानित्यं वन

विये ॥ ॥ नमो पूर्वतः वीही पूजा ॥ धनमंदाहूति

नमः ॥ नमः हायूहामपंवामनः धनं अमराडा मूत्रमनुन आहू

उं वननाय हूं वं हूं स्वाहा ॥ धनमनुन ॥ हाहा रनस्वनी वननाय मंछा

हूनी स्वाहा ॥ पंजांघं कुनि ॥

॥ धनं विहिमिमहालसाः हि कृष्णान्न

पाकदानवियः पतिष्ठाहूतसा दानवियममाल ॥ धनरात्रआगमसकः

हाडा नाडाः धूपयाय संखत्रैस्वहायः उं खं दाना हूं हूं स्वाहा ॥ वजन

अधीक्षानयायः उं हूं खं मूं रंः भदनिवजि हववजवच हूं ॥ धनजडावाहा

ननः वलदहावनायायः नृपयः डाहपन नमः उं नननि हूं निहिसुपिधि

विदवनाः हस्सुखां वनदकुसविहाव्य ॥ ॥ धनभ्रातृजननवायः पूज

हिमिमहालसा

किंदात्र वीयः उत्र मंदत्रयायः (ध्वनत्वां) दवि साषी ह्मनिः सर्ववर्ध
नागायिना ॥ अर्घ्यात्रियविमखः रूपिपात्रमिनासुखा ॥ यथामात्र
वलवलं रम्यमकसिंहनायिनां ॥ गथामात्रं वलकित्वासासिंह
नगायीनाः गथामात्रवर्जिताः सर्वसत्त्वार्थकाननाम् ॥ गममयः
त्रैः वः लं संकात्रं वायुत्रिंशः पथिविसमन्तासूपरीहंकात्रं
कडसासमहं वज्रमयीरुमिं वज्रपाकानवज्रपंजनविनात्रविहा

व्य ॥ विस्ववज्रवदिकायां वज्रपरीनामत्रः पनातिः उवनविहा
व्य ॥ ॥ पंथांघंठुनि ॥ निगंजनमर्घ्यायः पंथांघंमुनि ॥ वनिवि
य ॥ यनहो धेडायाडाः दसकीयायायः विधिधर्मपनिष्ठायाय ॥
यनदवनाह्नियायः यनं नीविदिगवनीविय ॥ आहूति ॥ गताहु
त्राग्निमुखनः संकात्रेनः रुवरुनपुमानं ॥ उकवज्रविहाव्य ॥ उं न
लनस्वाहा ॥ अत्रः उं नृपनिहं वज्रयस्वाहा कृ ॥ वज्रायस्व स्वा

हा॥सीउ॥वाधिवि काय स्वाहा॥अन गन सि॥उं सर्वपाप दहन व
 जाय स्वाहा सर्वपाप दहन स्वाहा॥शाय हास्त॥उं वज्रपूष्य स्वाहा ॐ
 णादि॥कथने विहि द कांदय॥उं सर्वसंघ द का र सि॥उं नम नम
 यनम॥पंचामरुः नरु न॥इइ सीउ धमि नाः संघस नय नम
 हूनि विय॥धने नीमा रा व नि विये॥धि हा य पंचांघं के ॥सी
 व नि स्वा न न नः पूर्य या यः संघ स इ द न या डा सु व

काथ कान॥नद्या द्य पद्य स दान पणि का॥मध्व स पूर्व स द्वा डान॥उं गं
 ग गन गं जाय॥उं वं व न्द पु हा ना ग ना जाय॥उं वं व द्वा ना ग ना जाय
 उं सं सूर्ये ना ग ना जाय॥उं सं ग न न्ना ग ना जाय॥ ॥नक्षत्र कि न द्वा
 व स पद्य मध्व स॥उं मं मनी वी ना ग ना जाय॥उं मं म नि पद्य ना ग ना जा
 य॥उं ॐ ॐ उ पु हा ना ग ना जाय॥उं वं व र्ष ना ग ना जाय॥उं हं ह रु न
 ना ग ना जाय॥ ॥पवि म द्वा त्र पणि का मध्व॥उं गं गं ग ना ग ना जाय

पदराजीन्द्ररत्न वज्राचार्य

ॐ संसिंधुनागवाजाय ॥ ॐ त्रैलोक्यनागवाजाय ॥ ॐ वैश्वनाग
वाजाय ॥ ॐ संसिंधुनागवाजाय ॥ ॥ नमोऽस्तुते वायव्यदिक्का ॥
मध्यस्थ ॥ ॐ त्रैलोक्यनागवाजाय ॥ ॐ त्रैलोक्यनागवाजाय ॥ ॐ त्रैलोक्य
वर्षेतेनागवाजाय ॥ ॐ शक्रसिंहनागवाजाय ॥ ॐ संसिंधुमणिक
नागवाजाय ॥ ॥ अस्तुतिपद्मदत्त ॥ ॐ त्रैलोक्यनागवाजाय
या ॥ ॐ त्रैलोक्यनागवाजाय ॥ ॐ संसिंधुनागवाजाय ॥ वा ॥

ॐ वैश्वनागवाजाय स्वाहा ॥ ॐ ॥ पंचायं मुनि ॥ वनिसनागवयशुत्र
रूपः वस्तुपहाऊवपूषाऊनायनं सत्रसुदाशकवपूस्तुवशीश्रुकृष्ण
मावर्हिषिगृहनिनववूननं नमामिहं ॥ ॥ ॐ नमस्तुहं नमामिहं न
मानमहंः सर्वववनयूजापस्तुनात्मानं निर्याकयामि ॥ सर्वसत्त्वप
रीजनं आत्मानं निर्याकयामि ॥ संसालनकिस्तुमाहमयष्टपापं क
सर्वशदनव्यक्तमनाहिगृहस्यामि किहिर्नकावून्यनिवपनस्य

15
10
बृचउग्रलपयंकवसः अरुसुगपस्वहिन ॥ नदूयनीकुंकावनेकु
र्गंगानवउग्रसुवउग्रघातः वहुनावनरुषिर्गं ॥ हानार्धं हानकि
किं निजावं वकनीकमसिष्यार्थं ॥ नत्सध्वपंकालपनीनामर्गं
पद्ममेशीविहाव्या ॥ कसलकयाजकः कनिकापत्रिस्थर्हं कापत्रि
मर्गं ॥ वंकावविजुवन्नवर्गो वन्नपत्रिनामर्गं वन्ननागनाज्ञास्वद
वदनमनूषाः सफरुनादिर्गं शुर्हं स्वर्गं दिव्यधनः वाकैमेलना

गणसुवन्नवन्नदव्यात्रिंशीर्गं नाहं नधसर्वालं कालः विविस्सुहृत्
नंसाहिर्गं ॥ ॥ ननपूर्वदन्नवाशुकिनागहृगोज्ञाश्चनवर्धः नवरुना
शुद्धिर्नदकिन्नवर्धे वा मडव्या लिंशिर्गं वा कालविजुविहाव्या ॥ ॥ द
किन्नदन्न ॥ नरुक्कनागनाज्ञाश्चनवर्धः पंचरुना शुद्धिर्गं नकावविजुः
दकिन्ननूरुयहृः वा मडव्या त्रिंशिरुधश्च ॥ ॥ पश्चिमदन्न ॥ कर्का
नकनागनाज्ञा हृदिगवर्धः सफरुना शुद्धिर्गं ककावविजुदकिन्नल्लि

ॐ: वाभंडव्यालिकतावयन् ॥ ॥ उरुनदत्रापिपन्ननागनाजाधूमव
रुनायुदिनं: पकाववीरुं दक्षिनजूरुतय: वाभंडव्यावीरुं
तावयन् ॥ विदिता ॥ ॥ अययईईकन्दनागनाजाय: कर्षवर्षद
मरुनायुदिनं: ईकावविजु दक्षिनकवयनधरा वाभंडव्यामिं गीन
तावयन् ॥ ॥ नेमलमहापन्ननागनाजासीनकवर्षजीशीदस
रुनायुदिनं: दक्षिनकूर्मधनं: वाभंडव्यावकनं: मकावविजुतावः

यन् ॥ ॥ वायव्यदत्रकलिकतागनाजा: विस्ववर्षजिमादयादुष्टरु
नायुदिनं: दक्षिनकवर्षलधनं: वाभंडव्यावीरुं: ककालविजु
वितावयन् ॥ ॥ अस्तानदत्रसंखपालनागनाजा: पीतवर्षनवरु
नायुदिनं सकावविजुवितावयन् ॥ मध्या ॥ पन्नस ॥ आ: पा: निगंजन
पूर्वपन्नपवीकास: स्वातवाय ॥ ॥ ईउवननागनाजाउपनिगजनना
गनाजा: कर्षवर्षयस्वाहा ॥ मध्या ॥ ईउवउपनागनाजाय शुक्रवर्षय ॥

ॐ
दक्षिणैः सूर्योपरु नागवाजा न कवर्क्षयः ॥ वाम ॥ ॐ सुगवाहना गवाजा
स्यामवर्क्षयः ॥ वाम ॥ दक्षिणदिश पत्तिका ॥ ॐ मूर्वीं जायं नागवाजा पी
तवर्क्षयः मध्यसः ॥ ॐ मनिपुताना गवाजा कर्षवर्क्षयः दक्षिण ॥
ॐ न्युना गवाजा ॥ सुगवर्क्षयः ॥ दक्षिण ॥ ॐ वर्धना गवाजा वैत्र
कवर्क्षयः ॥ वाम ॥ ॐ खटन नागवाजाः स्यामवर्क्षयः ॥ वाम ॥ पश्चि
मद्वार ॥ ॐ रं रत नागवाजा न कवर्क्षयः ॥ मध्य ॥ ॐ संधूना गवा

जा कर्षवर्क्षयः ॥ दक्षिण ॥ ॐ नृसूत्र नागवाजा सुगवर्क्षयः ॥ दक्षि
ॐ वर्धना गवाजा पीतवर्क्षयः ॥ वाम ॥ ॐ सीताना गवाजा स्यामवर्क्षय
वाम ॥ उरुवद्वार पत्तिका ॥ ॐ मनित्र नागवाजा स्यामवर्क्षयः मध्य
ॐ नृनर नागवाजा कर्षवर्क्षयः दक्षिण ॥ ॐ नृनव नफ नागवाजा र्क्ष
नवर्क्षयः दक्षिण ॥ ॐ सुगवाहना गवाजा पीतवर्क्षयः ॥ वाम ॥ ॐ सुगवा
हना गवाजा न कवर्क्षयः ॥ वाम ॥ विदिन पत्तिका कनसः ॥ ॐ नृनव ना

15
मधु॥ द्विच न द्विल गप द स गाम न भे ग रु का ॥ उं क रु ना द्या पृष्ठा ८ः स
वल स्य स मो द न क री सी ॥ इंद द य ॥ प द न ना गालं का न ना रु य ॥ हां ना
ही ॥ मा हा प द्य र ग ना ऊ र व ना ॥ हां ग रु ॥ कृष्ण द क वा ध्वा क री क ॥
हां पा द ॥ गु हा गः वा न ना ग ॥ इं सि षा ॥ अ र ग ष ष सु व न्य र ग ष ना ग
मा म दै न कालि व सा सा मा न्य ना ग ना वा न ॥ जा प ॥ ॥ उं व न ना य
इं वं इं स्वा हा ॥ न ना व री द द्या न ॥ उं ना व र मं नं प रि कृ स्वा हा ॥ उं व रु
व न ना यः ख र षा हि र ग ष र व न्ध र ज मू क स्य सा नि प र्षिं क रू र्था

10
युं आ ग रु र व र्षा प य ईं र रु द् २ स्वा हा ॥ उं ना ईं हा रु य वि रु य नं दा
प न रु प द्य क रु कः वा सृ किः स र व पा नः क री क इ न रुः रु रु क म
हा प द्य त्वा स प री वा न स्य ॥ इं व री गं ध पृष्ठा ध प दि प म रु रु द्या
म हां रु द्या ग त्वा ॥ स प री वा ना शी द्युं ॥ मं व री ग रु द् २ षा द रु पि वं रु रु
ई वं हा स रु फ न् सर्व स त्वा नां य सा नि प र्षिं क रू इं र रु द् व रु ध व ना
हा प य रि कृ स्वा हा ॥ पं नां धं मु नि ॥ ॥ ति ना ग स मा धि स मा फ ॥ ०

वर्षापर
१५

वसिकर्ष
१५

उं वज्र का धमहावज्र हनुद हृदयं व २ विध्वंस योऽस्मात्मानय ईं ह ॥ वा
स्मीकमर्हिका मादाय पंच गवा स हिरया विमलपार्श्वं वा रुकिं कृत्वा
कन विलम्बना दकं न गवय न ॥ गुगुत्र धूपमविच्छिन्नं जीशं कवची
दत्त्वा सफादिना दंत कक्षात्राः पातयन्ति ॥ वषा पत्र विधिः ॥ ॥ उं वा म
खुधमकसि वीर्यं जी ईं हनुद हृदयं व २ वद हनुमान य स्वाहा ॥ वामपाद
यः प्रक कनः संपन्न नीषित्वाः तस्या त्वननका नमान जी का न व उष्यं
विषट्मधः मनुष्यः पदं नृकः मय नृप नः वसिकर्ष मरुपं ॥ ॥

मयनाकर्ष
१५

रविषी
कडु ॥

यशान
१५

दसकिगमिह सर्वभया कषयः स्मिणीयुं जी ईं स्वाहा ॥ मय नाकर्षे न
॥ ॥ उं जी वज्र हनुद के रे ईं न ईं नागान वर्षा पय २ ईं उ किनिजा म
म्वरं रुट स्वाहा ॥ विषिकर्ष ॥ धर्मं उ न नृपयुं नडाः वचिं नडाः दानः
वीरुडाः श्रुति कृताडाः ज्ञापयाना थसः डा गमयुडा रुना किनया मथरु
ना ॥ ॥ उं जी वज्र हनुद कं नागान मानय २ ईं उ किनिजा न सं व न रुट स्वा
हा ॥ नृकापक अं उ नृक नृगाय नाराया रुना सकयकं ॥ थडा नतिनकाका
यः ध्वमनुना ॥ नृथ नं नी नाराया रुना सकयकंः साधनयानं नय नारायाक

15
 या नाडा ना राधा नयक नयक थः वनं काठः वसिष्ठ वसं ॥ हा कू का नी
 ना रा वा न न ॥ वा उ न क क क क ॥ अ उ र वा ष सि हा ॥ अ म म सि म ॥
 १ ॥ अ य धा नी ना रा ॥ उ य किं दा का वृ ग ॥ ड नै वृ ना ना य वृ ग ॥ अ उ न
 का य रं ग ॥ ध नि थ न स ना रा पा नय क न य ॥ व सि ग व स ना रा सा ध न
 या व नं क उ ना रा घ न या गं न ॥ ॥ सं ख न ट ट न रा धा ध क र्ष १२ स म
 हा ना जा न ल वा दा व सा ह व नः अ म ग ना डा सु ग स सा नि या ना व उ ना

का न रु र्वा सि व नी ॥ व सि ग व स ना रा सा ने धे प जा या हा व उ ना का न
 उ रु या ना डा पु र्ध ध न का डाः वि स र्ज न या ना डा ना रा घ व न न क उः थ
 म २ न य क न य ॥ प जा या क क मी वा र्था नः न न प की उ पा या हाः ज्वा
 र वा हा र या ध रु रु रु ॥ ॥

सा ध क या उ न य क वि
 व न न क उ न १
 ना रा य न ३०
 अ न प न २०
 व सि ग व स २१०
 या न १३ क न या न
 या न २२ द न
 या न २ म द या न
 या २ क पा
 या २ ध न पा
 या १ वा क न स
 या २० वा क न
 या ३० धा क सि
 या २० धा क सि
 या १० धा क सि
 या १० धा क सि
 या १० धा क सि
 या १० धा क सि